दादा का संक्षिप्त परिचय

दादाजी (श्री लोकमणी चतुर्वेदी) जैसे किसी व्यक्तित्व का परिचय देना शब्दों की ताकत से परे है। फिर भी श्रद्धालुओं के लिये व्यक्ति परिचय की आवश्यकता को देखते हुए हम प्रयास कर रहे हैं। यदि कोई भूल हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

दादाश्री का जन्म 5 मई 1945, उ.प्र. आगरा के केन्ट नामक स्थान में हुआ। दादाजी का जन्म एक सर्वसम्पन्न परिवार में हुआ जहां जीवन की सारी सुख-सुविधाएं उनके लिये उपलब्ध थी। वे अपने पिताजी की आठवी संतान थे परन्तु एक बड़ी बहन के अलावा सभी संताने नहीं रही। अर्थात वे सबसे बड़े पुत्र थे। दादा के पिताजी भी अपने परिवार में अकेले पुत्र थे तो पितृ पक्ष बहुत सीमित था। इसी प्रकार मातृपक्ष में भी दादा के बड़े मामाजी के पांच बच्चे होकर गुजर गये थे और छोटे मामाजी की कोई संतान नहीं हुई। इस प्रकार दोनों खानदानों (मातृपक्ष और पितृपक्ष) में दादा इकलौते चश्मोचिराग थे। सो बचपन बहुत वैभवसम्पन्न रहा। परन्तु बचपन में दादा को कई बीमारियाँ घेरे रहीं और बड़े-बुजुर्ग बताते हैं कि दादा बड़ी मुश्किल से बच पाये। बाबाजी (श्री रामकृष्ण चौबे) फिल्मकम्पनी में थे, उनका जीवन घूमने-फिरने का जीवन था। इसलिये उनका कभी कोई स्थायी निवास नहीं रहा। उन्हें कभी कहीं तो कभी कहीं जाना पड़ता था। इसलिये दादा का अधिकांश बचपन अपने बड़े मामाजी (श्री मदनमोहन) के सानिध्य में व्यतीत हुआ। मामाजी रेल्वे में डिवीजनल कमीशनर इन्सपेक्टर और बहुत महान विद्वान व्यक्ति थे। मामाजी का स्थानान्तरण भोपाल हो गया फिर थोड़े समय बाद ग्वालियर जाना पड़ा।

जिन्दगी के कई रूप होते है। किसी को पूरी दुनिया नहीं मिलती। कोई हमेशा खुश नहीं रह पाता। वहीं ग्वालियर में (मेट्रिक की पढ़ाई करते समय) बाबाजी की तबीयत खराब होने का समाचार मिला। उनकी सन् 1956 में कार दुर्घटना हो गई थी और उसमें उनका पैर टूट गया था। इस कारण उन्हें फिल्म इण्डस्ट्री छोड़ना पड़ी। फिर उन्होंने भोपाल में रेल्वे बुक स्टाल की एजेन्सी ले ली। परन्तु अक्सर तबीयत खराब रहने के कारण वो बुक स्टॉल पर ध्यान नहीं दे पाए। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी, बीमारी के उपचार और घर के सामान्य खर्चे, आमदनी के स्त्रोत कम होते जा रहे थे।

बाबा की बीमारी का सुनकर दादाजी भोपाल आ गये। पर बहुत प्रयास के बावजूद बाबाजी को बचाया नहीं जा सका। उस समय दादा सिर्फ 16 वर्ष के थे। घर का उत्तरदायित्व दो छोटे भाई, एक छोटी बहन और दादी (श्रीमती गुलाब देवी)। जिन्दगी के तौर-तरीके बदल रहे थे।

बड़े मामाजी रिटायरमेन्ट के बाद ग्वालियर में सेटल हो गये थे। परन्तु दादाजी से अत्याधिक प्रेम की वजह से वे भोपाल आ गये। पर दो वर्ष बाद उनका भी असामयिक निधन हो गया। अब शुरू हुआ जिन्दगी का अगला चरण –

दादाजी के शब्दों में –

''जिन्दगी के संघर्ष मुझे पेरशान कर रहे थे – मैं अपने आपको ठगा हुआ महसूस कर रहा था, मुझे रास्त दिखाने के लिये कोई नहीं था। में ईश्वर से पूछता था कि क्या इसीलिये मैं आराधाना करता रहा। क्या ईश्वर के पास मुझे देने के लिये यही जिन्दगी थी – मै टूट चुका था।

एक रात छोला मन्दिर जाकर मैं रोया, मैं बहुत रोया। पलायनवादी विचार मेरे मन–मस्तिष्क को घेर रहे थे। मैं अपनी जिन्दगी खत्म कर देना चाहता था। मुझे लग रहा था कि मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा। ये सब मुझसे नहीं हो सकेगा। मैं बार–बार ईश्वर से पूछता रहा कि ये मुझे किस कर्म का दण्ड मिल रहा है, पर कोई उत्तर नहीं मिला। फिर एक प्रकाश की किरण फूट पड़ी और मेरे भीतर और बाहर का सारा अन्धकार दूर हो गया, मुझे ईश्वर का साक्षात्कार हुआ। मेरी कोई शिकायत, अभिलाषा शेष न रही। मैने ईश्वर से निवेदन किया कि मेरी जिन्दगी की डोर पूरी तरह अपने हाथ में ले लें। जैसा चाहे मुझे चलाएं। धीरे–धीरे जन सेवा, मानव सेवा में मेरी रूचि जागृत होती गई और ईश्वर मेरी उंगली पकड़कर मुझे यहां तक ले आया''।

यहीं से दादाजी की आध्यात्मिक जिन्दगी शुरू हुई। पर अध्यात्म का किताबी अध्ययन दादाजी नहीं कर पाए। जीवन में समय हीं नहीं दिया। पर वे आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर विशेषज्ञता से देते है। शायद ये प्रारब्ध के खेल हैं जो हम सामान्य लोग आसानी से नहीं समझ सकते। दादाजी का आकर्षण बचपन से ही निराकार ब्रम्ह की ओर रहा। ईश्वर की कल्पना में परमपूज्य श्री हनुमान जी के चरणों में दादाजी का बचपन से झुकाव था।

दादाजी के शब्दों में – ''वे ही एकमात्र देवता नजर आते थे जो अपने लिये कुछ न चाहकर दूसरों के लिये अपनी जिन्दगी बिता पाए। उनका जीवन चरित्र, उनकी जीवन शैली बहुत प्रभावी है। उनका स्वामी–सेवक भाव, सुग्रीव के साथ उनका सखा–भाव और जिस तरह उन्होंने हर स्तर पर अपने उत्तरदायित्व निभाएं ये सहज नहीं है। उनका व्यक्तित्व मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा और उनकी आराधना में बचपन से ही मेरी रूचि रही''।

दादाजी का बचपन बड़े–मामा के सान्ध्यि में व्यतीत हुआ। वे प्राकण्ड विद्वान थे। ज्योतिष संबंधी जिज्ञासा दादाजी के मन में वहीं से जागृत हुई। वे बचपन में भविष्यवाणी करते थे, और वे सच हो जाती थी। मैं सोचता था और अंचभित रह जाता था। मुझे अपनी वाणी सिद्धि का कोई तर्क नजर नहीं आता था, इसलिये मेरी जिज्ञासा लगातार बढ़ती गई। मुझे सत्य बोलना ही प्रिय है

और सत्य ही सिद्ध होना चाहिये। मेरे भीतर विचार ईश्वर के द्वारा उत्पन्न होते हैं और मैं अनका सेवक हूं। मुझे ईश्वर अपने अनुसार चला रहा है और मैं ज्यादा नहीं सोचता''।

18 वर्ष की उम्र में दादाजी बैंक की नौकरी में आ गये। उन्होंने नौकरी की शुरूआत चतुर्थ श्रेणी से की। धीरे–धीरे जीवन में स्थिरता आने लगी। शिक्षा में पुनः रूचि जागृत हुई। शिक्षा में निरन्तरता बनी और दादाजी ने एम.काम (मैनेजमेण्ट) तक शिक्षा हासिल की। नौकरी के क्षेत्र में भी दादाजी लगातार उन्नति करते रहे। प्रभु की कृपा और माँ के आर्शीवाद से उन्नति पाते हुए वे प्रबन्धक के पद तक पहुंचे।

मुझे याद है दादा रात 9.00 बजे बैंक से घर आते थे और घर में उनसे मिलने वालों की भीड़ लगी रहती थी। घर आकर बस दादी के चरण स्पर्श कर दादा जन सेवा में लग जाते थे। मेरा बाल–मस्तिष्क सोचता था कि कैसे पिता हैं ये अपने बच्चों को भी समय नहीं दे पाते। पर आज मैं समझ सकता हूं, ये हर किसी के बस की बात नहीं है। हर कोई इतना कर्तव्यनिष्ठ नहीं हो सकता। आज दादा के इस महान बलिदान और कर्तव्यनिष्ठा का परिणाम हैं हजारों लोगों का सुख। जो उन्हें दादाजी के पास आकर मिला।

सबके जीवन में अच्छा और बुरा समय आता है, इससे कोई नहीं बच सकता, दादा जी जिन्दगी में भी खराब समय आये। पर मैं देख रहा था, दादा पूरी तन्मयता से अपनी जन सेवा में लगे रहे। इनती कर्तव्यनिष्ठा और त्याग की भावना सिर्फ संतो और वैज्ञानिकों में होती है और हम सब दादा की इस पावन प्रेरणा को प्रणाम करते हैं।

सामान्य व्यावहारिक जीवन के बहुत से काम दादाजी को घेरे रहते, पर उनके परिवार विशेषकर छोटे भाई (मंगलेश चतुर्वेदी) ने संयुक्त परिवार की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया और दादाजी को जन सेवा के लिये समय उपलब्ध हो सका। पर फिर भी दिन बैंक के काम। वापस घर आकर श्रृद्धालु दुखी सामान्य जन की भीड़। दोहरी जिंदगी का बोझ–दादा के अनुसार ''मैं दुविधा में था, फिर ईश्वर ने मुझे राह दिखाई।''

जन सेवा को सर्वोपरि मानकर दादाजी ने बैंक की नौकरी से त्यागपत्र देकर स्वैच्छिक रिटायरमेन्ट ले लिया और अब लोगों के भीतर मौजूद ईश्वर की सेवा करना ही दादाजी का जीवन बन गया है। भक्ति अर्थात किसी के अस्तित्व को अपने अस्तित्व का कारण बना लेना। दादाजी के पिता शिवभक्त थे और बाबा कृष्णभक्त। भक्ति हमारी वंशगत परम्परा है। पर दादाजी बचपन से ही श्री हनुमान जी में आस्था रखकर निराकार ब्रम्ह के उपासक थे। साकार ब्रम्ह की तरफ

– दादाजी के शब्दानुसार

दादाजी के शब्दों में – ''साकार ब्रम्ह की तरफ मुझे मेरी माँ और मेरी पत्नी ने मोड़ा। मेरी माँ जिनका आर्शीवाद और छत्रछाया के बिना मेरे जीवन का कोई मूल्य नहीं मेरी पत्नी का साथ, प्रोत्साहन और प्रेरणा। ये सब मेरे पीछे पड़कर मुझे भक्ति की ओर बढ़ाते रहे। मुझे जो कुछ मालूम है या जो कुछ भी मैं बोलता या करता हूं ये मेरे पूर्व जन्मों का संचय हैं। फिर चाहे अध्यात्म हो, ज्योतिष, तत्वज्ञान या सामाजिक समस्याएं। मैं अध्ययन नहीं कर पाया ये सब प्रारब्ध है। ये होना ही था। मेरे सारे विचार, ये ज्ञान सब ईश्वर मेरे मन में उत्पन्न करता है। ईश्वर की सेवा और मार्गदर्शन यहीं मेरा जीवन है।''

गुरू – शिष्य परमपरा

इस विषय को समझने के लिए पहले इन शब्दों का विश्लेषण कराना होगा।

गुरू – जो किसी को शिक्षा दें वह शिक्षक है। जो किसी को गुर दे (तरकीब) वह गुरू है शिक्षक संस्थाओं में होते हैं। गुरू जीवन में कई तरह से मिलते हैं। जिंदगी को जीने का तरीका जो सिखा दे वह गुरू है।

शिष्य – जो किसी शिक्षा को ग्रहण करें वह शिष्य है। शिक्षा ही जीवन का गुर बन जाती है। पर जो उस तरकीब को जीवन में आत्मसात कर लें वह शिष्य होता है बाकी वह सब जो शिक्षा सुन रहें है देख रहें है परीक्षा में बैंठे सब अभ्यार्थी है। शिष्य वही है जिसने शिक्षा गृहण करने का मन बना लिया है।

परंपरा – किसी ज्ञान, विषय या सामग्री का एक पीढ़ी, से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण होना परंपरा कहलाती है। जैसे – वृत, त्यौहार, उपवास, श्राद्ध दैनिक ज्ञान ये सब हमें हमारी पुरान पीढ़ियों से मिला है। जिसे हमने अपना लिया है यही परंपरा है।

गुरू – शिष्य परम्परा – अलग–अलग परिवेश का ज्ञान अलग–अलग होता है। किसी विषय को जानने की तरकीब या गुर जिस व्यक्ति को पता है वह गुरू हे। माने अलग–अलग गुरू है। गुरू एक ऐसा व्यक्ति है जिसका आचरण अनुकरणीय है। मतलब जो शिष्य के जीवन के लिए आदर्श बन सकता हो। योग्यता और शिक्षा तो बढ़ सकती है पैमाना है आचरण। यदि गुरू का आचरण संस्कारवान नहीं है तो वह संस्कारित शिष्यों का निर्माण नहीं कर पायेगा। गुरू की धर्म में निष्ठा होनी चाहिए। धर्म नियम है जो नियमों का पालन नहीं करेगा उसे दूसरों से उन नियमों का पालन करवाने का कोई अधिकार नहीं है। गांधीजी की कहानी आपने सुनी होगी। बच्चों से गुड़ खाना छोड़ने के लिए कहना है तो गांधीजी को खुद भी गुड़ खाना छोड़ना पड़ा। आप खुद नहीं करते तेा दूसरों को वैसा करने के लिए कहने का नैतिक विश्वास आप में नहीं होता। गुरू ज्ञानी नहीं गुणी होता है। वह अपने ज्ञान को जीवन में इस्तेमाल करके दिखाता है। ज्ञानी सिर्फ प्रवचन

दे सकता है पर वह इतना प्रभावी नहीं होता। गुरू का प्रभाव उसके कर्म का आत्मविश्वास है। गुरू को दो परिवेश में देखा जा सकता है।

1. तकनीकी गुरू
2. आध्यात्मिक गुरू

तकनीकी गुरू किसी एक विषय से संबंधित किसी शिष्य को सिखाता है जबकि आध्यात्मिक गुरू शिष्य के जीवन को खुद से जोड़ता हैं एवं उसे जीवन को जीने की तरकीब सिखाता है। गुरू और शिष्य के ज्ञान में इतना अंतर होना चाहिए कि वह शिष्य को जीवन पर्यन्त सिखा सके। गुरू होने की पात्रता है चरित्रवान होना। ज्ञानवान, आस्तिक और धर्मनिष्ठ व्यक्ति ही गुरू हो सकता है शिष्य एक खाली घड़ा होता है, एक कोरी स्लेट यदि पहले से ही उसे बहुत ज्ञान प्राप्त हो तो वह शिष्य नहीं बन पाता। आप भरे गिलास में और पानी नहीं भर सकते जो सुनेगा, समझेगा और अनुकरण करेगा वही शिष्य हो सकता है। शिष्य में आज्ञाकारिता होनी चाहिए। ज्ञान और शिक्षा जीवन और प्रकृति के नियम है। जो इन नियमों को नहीं मानेगा उसका नुकसान होगा क्योंकि नियम तोड़ने की सजा जीवन का हिस्सा है शिष्य में अनुशासन होना चाहिए। ज्ञान तो किताबों में भी लिखा होता है अलमारी में रखा ज्ञान व्यर्थ है। ज्ञान को व्यवहार में लाना जरूरी है। आचरण ही ज्ञान को सिद्ध करता है। जो ज्ञान व्यवहारिक नहीं है वह स्थापित भी नहीं हो सकता। आदि गुरू शंकराचार्य मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ में जीत गये थे शर्त यह थी कि हराने पर उन्हें गृहस्थ आश्रम त्याग कर सन्यास गृहण करना पड़ेगा। पर एक सन्यासी का ज्ञान क्या गृहस्थ के लिए व्यावहारिक है। शंकराचार्य को भी परकार्या में प्रवेश करना पड़ा। ज्ञान को सिद्ध करने के लिए उसे व्यवहार में लाना जरूरी है। वही ज्ञान व्यावहारिक है जिसे हम जीते है। गुरू हो या शिष्य ज्ञान स्थापित, व्यावहारिक और अनुकरणीय होना चाहिये। शिष्य को आस्थावान होना चाहिए उसे अपने गुरू में निष्ठा होनी चाहिए उसे अपने गुरू में निष्ठा होनी चाहिए। निर्णय गुरू करता है कच्ची मिट्टी कुम्हार से नहीं पूछती मुझे क्या बनाओंगे। निर्णय कुम्हार करता है क्या बन सकता है। क्या बनना चाहिए, शिष्य जिज्ञासु होना चाहिए। प्रकृति में जो भी दृष्टव्य है वह जानने की इच्छा तो हममे होती है परन्तु जो दिखता नहीं है अर्थात आध्यात्मक की जिज्ञासा शिष्य में होना ही चाहिए। जीवन और मृत्यु शिष्य के अन्वेषण विषय होते है। ब्रह्मा को जानने की जिज्ञासा शिष्य में होनी चाहिए। आज लोगों के प्रश्नों का जीवन से संपर्क टूट रहा है। समस्याएं मन द्वारा पैदा की जा रही है। असली समस्याओं पर हमने ध्यान देना बंद कर दिया है। विश्व में पहले गुरू भगवान बंद कर दिया है। विश्व में पहले गुरू भगवान शंकर हैं। ज्ञान की गंगा का प्रवाह ऊँ से शुरू हुआ है और ऊँ से शुरू हुआ है और ऊँ निराकार ब्रह्मा की तरह है। शिव माँ शक्ति के आध्यात्मक गुरू

हैं। शक्ति में क्षमताएं है पर उनका उपयोग दिशा निर्देश तो शिव ही करेगा। ज्ञान का ये प्रवाह शिव–पार्वती, शुक्र, अष्टावक्र, संदीपनी से होता हुआ कृष्ण तक पहुंचा। ज्ञान का यह प्रवाह निरंतर चल रहा है। ज्ञान की जिज्ञासा बढ़ती गई और समाधान देने के लिए स्नातक तैयार हो गये। आप शिष्यों को दीक्षित किया जाने लगा। परिवर्तन हमेशा होता रहेगा। ज्ञान का यह प्रवाह निरंतर आगे बढ़ता जायेगा। प्रकृति ही गति है उसे ही जीवन कहते हैं जिस दिन यह गति खत्म, मृत्यु हो जाती है कभी–कभी प्रारब्ध के ज्ञान से शिष्य परिष्कृत हो जाता हैं वह अपना गुरू पहचान लेते है। कभी कोइ गुरू शिष्य को पहचान लेते है। कभी कोई गुरू शिष्य को पहचान लेता है पर यह प्रवाह है। गुरू हम किसी को भी बना सकते है पर किसी कि इच्छा के विरूद्ध उसे शिष्य नहीं बनाया जा सकता। गुरू शिष्य बनाता है। शिष्य महान है, जो किसी को अपनी तकदीर सौंप देता है, बना दो जैसा चाहे, वह अपनी कोरी स्लेट समर्पित कर देता हैं, लिख दो जो चाहे। गुरू खुद को नहीं झुकाता शिष्य झुका रहता है। शिष्य महान है।

द्रोणाचार्य ने एकलव्य को दीक्षा देने से इन्कार कर दिया था, पर एकलव्य डटा रहा अंत में गुरू द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरूदक्षिणा में अंगूठा मांग लिया। एकलव्य को द्रोणाचार्य ने शिष्य स्वीकार नहीं यिका तो उससे गुरूदक्षिणा किस हक से मांगी। शिष्य महान है वह गुरू के गुरू होने का सर्टिफिकेट देता है। हम खुद स्वयं के गुरू भी हो सकते है पर गुरू के प्रति समर्पित होना जरूरी है। हम खुद अपने आप को कैसे अर्पण कर सकते है। अतः खुद स्वयं का गुरू होना थोड़ा मुश्किल है शिष्य होना कठिन है भगवान से भक्त बड़ा है। उसे भगवान होने की स्वीकृति भक्त ही देता है। यदि वह खुद कहें कि मैं भगवान हूं तो लोग उसे घमंडी कहेंगे। कोई और कहते कि ये भगवान हैं, महान है तो दूसरे भी उसका सम्मान करेंगे। गुरू और शिष्य ज्ञान के प्रवाह के रास्ते में खड़े जीवन है। जो प्रकृति और जीवन को खोज रहें है। दोनों ही महान हैं। पर शिष्य होना कठिन हैं ‘‘जब कोई एक अपने वास्तविक ज्ञान को किसी दूसरें में स्थापित करने को तत्पर हो और दूसरा अपने उस ज्ञान को स्थापित करने की स्वीकृति दे तो गुरू–शिष्य परंपरा स्थापित होती है और भारत में इस परम्परा का लम्बा इतिहास है। भारत में इस परम्परा का लम्बा इतिहास है। भारत भूमि में बहुत सारे गुरू और महान शिष्यों को जन्म दिया है।

जिज्ञासा एवं समाधान

जिज्ञासा – वयक्ति क्या है ?

समाधान – व्यक्ति जीवन का एक स्वरूप है जो हम जैसा ही है। व्यक्ति जैसा है वही उसका वयक्तित्व होता है। किसी व्यक्ति के जीवन के चाल पहलू होते है।

1. जिनके बारे में वो भी जानता है, दूसरे भी।
2. जिनके बारे में वो जानता है, दूसरे नहीं।
3. जिनके बारे में दूसरे जानते हैं, वो नहीं।
4. जिनके बारे में दूसरे नहीं जानते और वो भी नहीं।

बस यही सारे पहलू मिलकर एक व्यक्ति बन जाते है।

जिज्ञासा – व्यक्ति अकेला क्यों पड़ता जा रहा है ?

समाधान – ये तो व्यक्ति की भावना है। किसी भी स्थिति को देखने के कई कोण, (दृष्टिकोण, नजरिया) हो सकते है। कहो कि गिलास आधा भरा है या आधा खाली। फिर भी कुछ मायने में यह सच है व्यक्ति अकेला पड़ता जा रहा है, कारण यह खुद हैं। वो खुद सबसे दूर जा रहा है। दुनिया तो वही है, सब उसी में हैं तो वो क्यों अकेला है। दो तरीके हैं या तो उनके पास जाओ या उन्हें अपने पास आने या बुलाने लायक बनो। इतना प्रसिद्ध होना सबके लिये संभव नहीं है। आसान तरीका है हम उनके पास जाएं, उनसे हाथ मिलाएं, उनसे बातें करें, उनके बारे में जाने, कुछ अपने बारे में बताएं। यदि व्यक्ति नहीं चाहे तो वह अकेला नहीं पड़ेगा। जब व्यक्ति परिवार के बारे में, परिवार समाज के लिये, समाज राष्ट्र के लिये और राष्ट्र विश्व के लिये सोचने लगेगा तो कोई अकेला नहीं पड़ेगा। प्रवृत्तियूं बदल गई हैं। हमें भी बदलना होगा। हम यदि चाहें तो कुछ भी हो सकता है।

जिज्ञासा – मशीन और मानव की लड़ाई कब खत्म होगी ?

समाधान – अच्छा प्रश्न है। मानव एक ऐसी मशीन है जिसमें जीवन है, जो खुद चल सकता है, खा सकता है, सासं ले सकता है। मानव–मानव की लड़ाई कब खत्म होगी। मशीन–मशीन की लड़ाई कब खत्म होगी। अच्छा प्रतिभाशाली मानव अशिक्षित मानव को बेरोजगार बना देता है। अच्छी मशीन, पुरानी मशीन को बेकार कबाड़ा बना देती है। ये लड़ाई चलती रहेंगी, क्योंकि दुनिया में सिर्फ एक सत्य है। सब कुछ चलता रहेगा।'' मशीन और मानव की लड़ाई कभी खत्म नहीं होगी। ये कलयुग है। कल माने मशीन। मशीन का युग। हमें मशीन के साथ चलना सीखना पड़ेगा। आज मशीन हमारी मास्टर होती जा रही है, केलकुलेटर के बगैर हम गुणा–भाग नहीं कर पाते। हम मशीन के गुलाम बनते जा रहे है। हमें स्वावलंबी होना चाहिये। मशीन एक ऐसा यंत्र है

जो काम को आसान बना देती है। हथौड़ी न हो तो हथेली से कील ठोकना पड़ेगी। मशीन जरूरी हे। पर हम पिछड़ते जा रहे। जितना विकास मशीन का हुआ, उतना मानव नहीं कर सका ये बहुत जरूरी मामला है, इस पर ध्यान देना पड़ेगा।

जिज्ञासा – मनुष्य शैतान कैसे बना?

समाधान – मनुष्य शैतान नहीं बना। भगवान माने अच्छाई शैतान माने बुराई। ये दोनों तो हमेशा से ही मनुष्य में थे। कभी भगवान प्रभावी था, अब शैतान सिर चढ़कर बोलता है।

टालस्टाय की एक कहानी है – एक किसान था, सज्जन, भलामानुष। मेहनत करता था, दूसरों के दुख बांटता था। एक दिन शैतान ने प्रेत को बुलाया और कहा जाओ उस किसान को शैतान बना दो। किसान रोज की तरह अपनी रोटी का डिब्बा लेकर खेत आय। डब्बे को झाड़ी में से डिब्बा निकाला उसमें रोटी की जगह पत्थर रख दिये। शैतान बुरा व्यवहार करता है। किसान आया, उसने डब्बा खोला। रोटी की जगह पत्थर रख दिये। शैतान बुरा व्यवहार करता है। किसान आया, उसने डब्बा खोला। रोटी की जगह पत्थर रखे थे। उसने भगवान के हाथ जोड़े, बोला शायद उस व्यक्ति को ज्यादा भूख लगी होगी, हे ईश्वर उसका कल्याण करना। शैतान छिपकर देख रहा था। उसने सोचा कि ये उल्टा कैसे हो गया। अब तो किसान से दोस्ती करनी ही पड़ेगी। वो किसान का दोस्त बन गया। एक दिन शैतान बोला राज्य में खूब बारिश होने वाली है, किसान ने खूब धान बोया अच्छी फसल आई, किसान ने खूब पैसा कमाया। अगले वर्ष शैतान बोला बारिश अच्छी नहीं होगी, मोटा अनाज बो दिया। बाकी सब ने सोचा पिछले साल खूब बारिश हुई थी, उन्होंने धान बोया। लोग नुकसान में रहे, किसान ने मुनाफा कमाया। उस पर बहुत पैसा इकट्ठा हो गया। शैतान बोला इसकी शराब बनाओ – किसान और अमीर होता गया। वह भी शराब पीना सीख गया। एक दिन प्रेत अपने मालिक शैतान को लेकर आया देखो मालिक मैने अपना काम कर दिया। दोनो झाड़ी मे छिपकर देख रहे थे। शराब का पहला दौर चला – सब लोग एक दूसरे की चापलूसी करने लगे। फिर शराब का दूसरा दौर–लोग एक दूसरे से लड़ने लगे, भेड़ियों की तरह गुर्राने लगे और गालियां देने लगे, शराब का तीसरा दौर शुरु हुआ – सब घर जा रहे थे लड़खड़ाते हुए कोई नाली में पड़ा था तो कोई कीचड़ में। शैतान ने प्रेत से कहा – वाह। पर ये सब उसे रास्ता बताया और वो चल पड़ा।

मनुष्य शैतान नहीं बना, वो पहले से ही था। मनुष्य भगवान नहीं बनता, वो पहले से ही है। हम जिस रास्ते पर चल पड़े, वही मंजिला हमें मिलती है।

जिज्ञासा – लोग बेईमानी क्यों करते हैं?

समाधान – स्वार्थ सिद्धि के लिये। वो कुछ पाना चाहते हैं, और वो पाने का सही तरीका इस्तेमान नहीं करना चाहते। उसे पाने का गलत तरीका अपनाना बेईमानी है। लोगों में और! की भावना बढ़ती जा रही है। हम जितना खा नहीं सकते उससे बहुत ज्यादा इकट्ठा कर लेना चाहते हैं। हम पदार्थ पर अपना अधिकार चाहते हैं। मेरा ये, मेरा वो, मेरा सब कुछ। हम भूल जाते हैं कि संसार नश्वर है।

''सब खाक धरा रह जाएगा, जब लौट चलेगा बंजारा''।

जिज्ञासा – राष्ट्र के निर्माण में हम साधारण लोग क्या योगदान कर सकते हैं?

समाधान – राष्ट्र साधारण लोगों से मिलकर ही बनता है। जैसे लोग वैसा राष्ट्र। दूसरे विश्व युद्ध के बाद जापान पूरी तरह टूट चुका था। पर सिर्फ 50 साल की मेहनत से जापान एक समृद्धत्तम देश बन गया। ये सब तरक्की कौन करता है देश या हम। हम साधारण लोग ही मिलकर देश या राष्ट्र बनाते है। नागरिकों को शासन की सहायता करनी चाहिये और शासन को लोककल्याण की जिम्मेदारी का पालन करना चाहिये। साधारण नागरिक चरित्रवान होंगे तो राष्ट्र और शासन पथभ्रष्ट नहीं हो सकेगा। शासन विकास नहीं करता वो तो बस विकास के अवसर और सुवधिाएं जुटाता है, विकास तो हम साधारण लोग ही करते है। तो बनो यदि देश को बनाना है। तुम बन गये तो देश अपने आप बन जाएगा।

जिज्ञासा – युवा–वर्ग पश्चिम की ओर क्यों भाग रहा हैं?

समाधान – चमक–दमक के कारण। अधूरे ज्ञान के कारण। हम भौतिकवादी ही चले है। पदार्थ ही हमारा जीवन बन गया हे। आत्मा का सूरज पदार्थिक दुनियां के धुएं में ढंक गया है। हमारी प्रवृत्तियां, इच्छाएं, वासनाएं हमें पश्चिम की ओर ले जा रही है और ये केवल युवा–वर्ग की ही बीमारी नहीं है। हमारी माताएं अपने बच्चों को समय नहीं दे पाती। हमारा पुरूष चिन्तन करना छोड़ सिर्फ चिन्ता करता है। विकास कहां से होगा हमारा मानसिक विकास रूक गया है। आज हम बस इकट्ठा करने में लग गये हैं वो जो दिखाइ दे रहा है, फ्रिज, टी.वी, कार, बंगाल ये वो। बस हम अब खुद को नहीं देखते। ये सब इकट्ठा करने में हम बंटते जा रहे हैं।

जिज्ञासा – तरक्की या विकास क्यों जरूरी हैं?

समाधान – तुम कैसे रूक सकते हो यदि रास्ते ही चल रहे हो। पृथ्वी और समय लगातार चल रहे हो। पृथ्वी और समय लगातार चल रहे हैं। हम रूक भी गये तो चलते रहेंगे – पर कहीं पहुंचेगे नहीं। हमें निर्धारित करना होता है कि हमारी मंजिल क्या है और उस दिशा की ओर हम चलते है। विकास माने आगे बढ़ना। विकास कई तरह का हेाता है भौतिक विकास, मानकस, आध्यात्मिक

विकास, प्राकृतिक संसाधनो का विकास, यांत्रिकी विकास। विकास के पैमाने होते हैं। 1. आर्थिक 2.सामाजिक स्वतंत्रता 3. वैचारिक दृष्टिकोण।

विकास की नींव होती हैं बुनियादी आवश्यकताएं रोटी–कपड़ा और मकान। ये पा लेने के बाद विकास शुरू होता है। साधारण व्यक्ति की सुख तक पहुंच होनी चाहिये। पर अभी एक वर्ग विशेष का विकास हो रहा है, उद्यमी वर्ग। सभी इस पैमाने पर सक्रिय नहीं है। विकास में जन साधारण का योगदान हो रहा है पर जनसाधारण का विकास नहीं हो रहा। असमानता, राजनीति और आलस्य हमारे सुख के रास्ते में पहाड़ बनकर खड़े है। विकास जरूरी हैं क्योंकि ये हमारा मौलिक अधिकार है और नैतिक कर्तव्य। क्योंकि हम अपने अतीत से भविष्य में जाना चाहते हैं क्योंकि समय के साथ हमें भी आगे बढ़ना चाहिये।

जिज्ञासा – समाज में अश्लीलता क्यों बढ़ रही हैं ?

समाधान – क्योंकि समाज का कोई वैचारिक आधार नहीं रहा। शील माने स्वभाव का वो हिस्स जो विनम्र है और समझदारी से संबंधो का संचालन करता है। अब समाज का ऐसा आधार नहीं रहा। समाज के बड़े लोग, राजनेता, उद्योगपति अब देश के बारे में नहीं सोचते। मानसिक विकलांगता का दौर चल रहा है। स्वस्थ मानसिकता जैसी अब कोई चीज नहीं रही। युवा वर्ग बड़ों को सम्मान देना नहीं चाहता। बड़े वर्ग बड़ों को सम्मान देना नहीं चाहता। बड़े अपने छाटों के लिये समय नही निकाल पा रहे, तो एक बाजार पैदा हो गया है जिसका फायदा (टी.वी.) विज्ञान के माध्यम से कुछ अशलील व्यापारी उठा रहे हैं और धीरे–धीरे टी.वी. अश्लीलता का केन्द्र बनता जा रहा है। अब मर्यादाएं नहीं रहीं। सीमाएं खत्म हो गई है। अगला समय और भयावह होगा।

जिज्ञासा – आजकल के बच्चे किसी की सुनते क्यों नहीं ?

समाधान – ऐसा नहीं हैं, हां अब कहने वाले उतने प्रभावी नहीं रहे। आप बच्चे से कहो सिगरेट मत पीाना, बुरी बात है और पान की गुमठी पर सिगरेट पीते हुए बच्चा आपको देख ले तो फिर वो आपका उतना सम्मान नहीं करेगा। फिर वो आपकी नहीं सुनेगा। आजकल के बड़े खुद करके दिखाने में यकीन नहीं करेगा। फिर वो आपकी नहीं सुनेगा। आजकल के बड़े खुद करके दिखाने में यकीन नहीं करते। दिन भर टी.वी के सामने बैठे, घटिया मनोरंजन करते रहते हैं इसका बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। आदर्श और परंपराएं बच्चों में संस्कार से आते हैं और संस्कार नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से लेती है। कोई पिता अपने पिता की नहीं सुनता, उन्हें जवाब देता है और फिर उम्मीद करता है कि उसका पुत्र उसकी सुने, तो ऐसी उम्मीदें पूरी नहीं होती। बच्चों को दोष देने का कोई मतलब नहीं। वे तो समाज का आईना है। मासूम, भोला–भाला मस्तिष्क, जो मिलता है स्वीकार कर लेता है। हमें उन्हें दोष नहीं देना चाहिये। जरूरत इस बात की है कि हमें समझे, कि

हमारी गलती क्या है, हमें खुद को प्रभावी बनाना होगा। बच्चे सुनते हैं, सबकी सुनते हैं। प्यार से बोलो, मीठा बोलो, धीमे बोलो।

जिज्ञासा – मंहगाई क्यों बढ़ती हैं ?

समाधान – मंहगाई एक तुलनात्मक शब्द है। एक अमीर से यही प्रश्न पूछो तो वो कहेगा ''क्या फर्क पड़ता है।'' जिसके पास जो नहीं है उसे पाना मुश्किल लगता है। वस्तुतः व्यवहारिक मायनों में मंहगाई का संबंध वस्तु की उपलब्धता और उस वस्तु की आवश्यकता से है। जब चीजें कम हो और खरीदने वाले ज्यादा तो उन्हे मंहगे दामों पर बेचा जाने लगता है। इसीलिये मंहगाई बढ़ती है। जमाखोरी भी इसका एक बड़ा कारण है। व्यापारी वर्ग स्वार्थ हित में आवश्यक उत्पादों का संचय करते रहते है। जिससे कृत्रिम (मानव द्वारा पैदा किया हुआ) अभाव पैदा हो जाता है और मंहगाई बढ़ जाती है। हमें समझदार बनना चाहिये। अपनी जरूरतें कम करके, संसाधन बढ़ाकर और पूरी ऊर्जा का इस्तेमाल करके ही हम जीवन का ऐश्वर्य भोग सकते है।

जिज्ञासा – दुख क्यों होता है ?

समाधान – दुख का कारण है इच्छा। हम पाना कुछ और चाहते है और वो हमें नहीं मिलता, जो हमें मिलता हैं हम उसे पाना नहीं चाहते। यही भावना हमारा दुख है और दुख रहेगा। भगवान बुद्ध ने ''दुःख'' विषय पर पूरा अन्वेषण किया और चार आर्यसत्य कहे।

1. दुख है।
2. दुख का कारण है।
3. दुख को दूर करने का उपाय है।
4. कोई दुख नहीं है।

हम अधिकारवादी, एकात्मवादी लोग। हम तुलना करते रहते है। दुख का कारण है सुख। यदि सुख न हो तो दुख भी नहीं होगा। हम पदार्थ का संचय करने मे उम्र गुजार देते हैं। पर समय नहीं गुजरता, हम गुजर जाते हैं। दुख का कारण है अज्ञान, हम समझते ही नहीं कि हम क्या हैं, क्यों हैं हमारे जीवन का मूल उद्देश्य क्या है, हमें क्यों पैदा किया गया। दुख हमारी अनुभूति है। हम दुख के पार जा सकते हैं। वहां कोई दुख नही है।

जिज्ञासा – आतंकवाद का अन्त कब होगा ?

समाधान – जब आतंकवाद बढ़ाने वाली परिस्थितियां नहीं रहेंगी, आतंकवाद अपने आप परिस्थितियां नहीं रहेंगी, आतंकवाद अपने आप खत्म हो जाएगा। जैसे हवा–पानी न रहने पर जीवन अपने आप खत्म हो जाता है, ऐसे ही आतंकवाद का हवा–पानी खत्म हुआ तो आतंकवाद भी खत्म हो जाएगा। आतंकवाद पैदा होता है डर के कारण। वो डरते हैं इसलिये डराते हैं। वो इसलिये डरते हैं

क्योंकि उनका जीवन दुविधा में है, जब राजनीति का संचालन अच्छे लोग करेंगे और व युवाओं की मनोस्थिति को समझेंगे तो युवाभ्रमित नहीं होगा। युवावर्ग को जीवन की समझ और प्रेरणा की जरूरत होती है। जो हमारा नेतावर्ग उन्हें नहीं दे पा रहा यही आतंकवाद का असली कारण है। जब देश सीमा न रहेगा, विश्व हमारा घर हो जाएगा। जब राजनीति में कुटिलता का अन्त हो जाएगा। जब प्रेम दुनिया की सबसे बड़ी ताकत होगा। जब सरकार खुले दिमाग से परिस्थितियों का विश्लेषण करेंगी। जब बेरोजगारी नहीं होगी, युवा स्वस्थ और कार्यलग्न होगा, आतंकवाद अपने आप खत्म हो जाएगा।

जिज्ञासा – शक्ति क्या हैं :–

समाधान – शक्ति माने किसी कार्य को करने की क्षमता। ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में कुछ भी ऐसा नहीं है जिसका वैज्ञानिक आधार न हो। हाँ विज्ञान को ईश्वर के रास्ते ढूंढने में बहुत समय लग गया और अभी यात्रा बस शुरू हो पाई है। और अभी यात्रा बस शुरू हो पाई है। हाथ हिलाना, पलक झपकाना, होठों से शब्द निकलना, आंखो का कुछ देखना, कानों का कुछ सुनना, पेड़ों का हिलना, हवा का चलना, नदियों का बहना, सब कार्य है और कोई कार्य अपने आप नहीं होता। एक तन्त्र और निकाय से ही किसी कार्य की परिणति हो सकती है। तन्त्र या निकाय द्वारा कसी कार्य को पूर्ण करने में खर्च की गई उर्जा ही शक्ति है। इसे हम वर्गीकृत कर सकते है।

1. शारीरिक शक्ति
2. मानसिक शक्ति
3. आत्मिक शक्ति
4. आध्यात्मिक शक्ति
5. बौद्धिक शक्ति
6. पदार्थिक शक्ति
7. अपदार्थिक शक्ति
8. जैविक शक्ति

इत्यादि

जिज्ञासा – धर्म क्या है ?

समाधान – किसी चीज का वास्तविक गुण/वो जो है, जैसा है वही उसका धर्म है। जैसे सोना पीला है। हम मानव हैं। शक्कर मीठी है। धतूरा कड़वा है। किसी चीज, व्यक्ति, संस्था या शरीर के होने में प्रयुक्त हुए आवश्यक तत्वों का गुण, धर्म है। राज्य का धर्म है समानता, समदृष्टि। युवा का धम्र है कर्तव्यनिष्ठ सृजन। मान का धर्म है विकास और कल्याण। व्यक्ति का धर्म है विकास और

कल्याण। व्यक्ति का धर्म है उन्नति, बेहतरीन जिन्दगी। हम धर्म को भूल रहे हैं। हमारे असली गुण धूमिल पड़ते जा रहे है और परिणाम है दुविधा और संताप।

आवश्यकता इसी बात की है कि हम अपने धर्म पर चलें। तभी हम सुखी हो सकते हैं।

जिज्ञासा – राजनीति में क्या धर्म को शामिल होना चाहिये।

समाधान – अवश्य। धर्म माने सद्इच्छा। यही राजनीति की प्रेरक होनी चाहिये। राजनीति पर नियन्त्रण धर्म ही कर सकता है। प्राचीनकाल से ही राजा पर गुरू का आर्शीवाद रहता आया है। राजा शासन करता है वर्तमान को बनाये रखने के लिये। धार्मिक व्यक्ति भविष्य को सोचता है। विचारक, चिन्तक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रेरक नेता, संत सब धार्मिक लोग होते है।

धर्म को पूजा से कोई संबंध नहीं है। राजनीति में धर्म अवश्य होना चाहिये पर अब धर्म में राजनीति आ गई है। धर्म अशुद्ध हो रहा है। कुछ लोगों को आना पड़ेगा अब राजनीति के गंदे दलदल में। किसी को तो सफाई करनी पड़ेगी। नहीं तो भविष्य बहुत गन्दा, बदबूदार और बीमार होगा। धार्मिक व्यक्ति को राष्ट्र निर्माण में सहयोग देना चाहिये। कौन मरा यदि देश जिन्दा है और कौन जी रहा है – यदि देश मर गया।

जिज्ञासा – भागय क्या है, उसमें क्या लिखा हैं?

समाधान – भाग्य हमारे कर्मा का विस्तार है। हम जो करते हैं वो कर्म है और कर्म के बंधन होते हैं। भाग्य हमारे कर्मो के परिणाम है। वर्तमान कर्म या प्रारब्ध। भाग्य में सिर्फ भाग लिखा है, सुखकारी या दुखकारी। हम हमारे कर्मो पर नियंत्रण कर अपने भाग्य पर नियन्त्रण कर सकते है। हम अपने कर्मा को दिशा देकर अपने भाग्य को दिशा दे सकते हैं। अन्त में जो भी हम होते हैं वही हमारा भाग्य होता है।

जिज्ञसा – क्या पूजा करने से भगवान मिलते हैं?

समाधान – हां! करने से कुछ भी हो सकता है। भगवान परमात्मा है। हम सबकी आत्माओं का समाहित रूप है परमात्मा। ईश्वर हमारे भीतर है, वही हमारे जीवन का स्त्रोत है, और वही, हमारी मृत्यु का कारण। ईश्वर के बिना कुछ नहीं है। ज्ञान, तप, साधना, योग, पूजा, भक्ति ये सब ईश्वर तक पहुंचने के साधन है, इनमें से किसी भी साधन से ईश्वर तक पहुंचा जा सकता है। जिस दिन हमें आत्म साक्षात्कार होता है हमें ईश्वर भी मिल जाता है हमारे मन के भीतर। पर बाकी साधनों की तुलना में पूजा और भक्ति आसान और ग्राह्य हैं। हमें अपने मन और चित्त को शान्त करने के लिये कोई केन्द्र चाहिये और वहीं ईश्वर है।

जिज्ञासा – क्या औरतों को हनुमा जी की पूजा करनी चाहिये?

समाधान – क्यों नहीं। कौन बंधन लगा सकता है। ईश्वर और भक्त के बीच कोई दीवर नहीं हो सकती। हां वे ब्रह्मचारी, अनुशासनप्रिय ईश्वर है। उनका अपना अनुशासन है, यदि तुम्हारा भाव गलत है तो तुम्हे पाप लगेगा। अब वो देहधारी नहीं है। अब उन अमूर्त को हम मूर्ति में देखते हैं। हम उस आत्मा से संपर्क करते हैं वहां पर इस संसार के नियम अलग नहीं होता। वहां पर इस संसार के नियम अलग नहीं होता। बस अनुशासन जरूरी है। औरतों की दिनचय्रा में धूल, कचरा, बच्चों का मल–मूत्र, घर–गृहस्थी, चौका–बासन, वो हमेशा शुद्ध नहीं हर पाती। वैसे हनुमान जी की पूजा में किसी के लिये कोई दोष नहीं है। हां हमारी भावना सही होनी चाहिये।

जिज्ञासा – क्या उपवास करना फायदेमंद हैं ?

समाधान – हां, पर इतना नहीं कि हम रोज–रोज उपवास करने लगें। हफ्ते में एक–दो दिन फलाहार करना या भोजन न करना शरीर के लिये अच्छा है। श्री लालबहादुर शास्त्री जी कहते थे कि सभी भारतीयों को एक दिन जरूर उपवास करना चाहिये, पर तब कारण अलग थे। खाद्यान्न की कमी थी। एक दिन हम न खाएं तो दूसरों के लिये बच जाएगा। पर अब ऐसा नहीं है। अब तो बुहतायात का युग हैं। हमें अतिवादी नहीं होना चाहिये। न तो बहुत ज्यादा खाना अच्छी बात नहीं होना चाहिये। न तो बहुत ज्यादा खाना अच्छी बात है और न रोज–रोज उपवास करना। जिन्दगी में संतुलन होना चाहिये। उपवास में माने उसके समीप रहना, ईश्वर के सान्निधय में रहना ऐसा उपवास ठीक है कि हम गाली देना छोड़ दें, क्रोध छोड़ दें, तंबाकू छोड़ दें, पर खाना छोड़ देना, पानी छोड़ देना सांस लेना छोड़ देना यह तो जीवहत्या है, हम अपने आप को दंड दें। हमें एक या दो उपवास करने चाहिये बस। जीवन संतुलन से बेहतर चलता है।

जिज्ञासा – भूत – प्रेत क्या हैं ?

समाधान – ये योनियां हैं। जीवन कर्मो से बना है और कर्मो के बंधन है। बगैर उजाला नहीं होगा, अच्छे के बगैर बुरा नहीं। कर्ता और कर्म आपस में बंधन के धागे से जुड़े रहते हैं। कर्म कई होते हैं दर्शनावाणी, ज्ञानावाणी, कर्ताकर्म। यदि अन्य कर्मो के बंधन शेष हो और देह प्राप्त कर्म क्षीण हो जाएं तो इस प्रकार की योनियां मिलती हैं। भूत–प्रेत शरीर नहीं होते। ये सूक्ष्मदेहधारी होते हैं। इन्हें सामान्य दृष्टि से नहीं देखा जा सकता, पर मानसिक शक्तियों से कुछ लोग इन्हें देख भी सकते हैं। जिस दिन इस सूक्ष्मशरीर को कोई पदार्थिक शरीर या देहे मिलेंगी, वो योनि मुक्त हो जाएगा।

जिज्ञासा – तंत्र, मंत्र और सिद्धि क्या हैं ?

समाधान – तंत्र तन से बनता है। तन माने शरीर। तंत्र शरीर का अनुशासन है। मंत्र मन से बनता है। मन अदृश्य है। मन्त्र मन का अनुशासन है। यन्त्र मानव बनाता है। यह पदार्थ से बना

है। यह काम को आसान बना देते हैं। सिद्धि अर्थात जो चाहते थे वो मिल गया, हमारा प्रयोजन सिद्ध हो गया। तंत्र का प्रयोजन या मंत्र का या यंत्र का, जो चाहा था मिल गया।

तंत्र और मंत्र दोनों में शब्द सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। ध्वनि ऊर्जा है और यह ईश्वरीय ऊर्जा है। हम ध्वनि और शब्दों के सम्मोहन से शरीर को अनुशासित कर सकते हैं। ध्वनि के लगातार उच्चारण से हमारे शरीर में सूक्ष्म ऊर्जा केन्द्र निर्मित हो जाते हैं जिससे हमारी मानवीय शक्तियाँ बहुत अधिक विकसित हो जाती हैं और हम अपनी इच्छानुसार प्रयोजन सिद्ध कर भी सकते हैं और करवा भी सकते हैं। तंत्र दो तरह के होते हैं।

1. सात्विक तंत्र 2. तांत्रिक तंत्र

सात्विक तंत्र सुाध, माहत्मा और साधक करते हैं मानव के हित के लिये। जबकि तांत्रिक तंत्रों का उपयोग किया जाता है स्वार्थ पूर्ति के लिये। इन्हें सिफली तंत्र भी कहते है। इसमें मुर्दा जगाते हैं। खोपड़ी में चावल पकाते हैं और ऐसे ही, आत्मा जो शरीर को त्याग चुकी होती है, तीन लोक तीन काल की ज्ञाता होती है। फिर चाहे वो किसी की भी आत्मा हो। यदि आत्मा से साक्षात्कार हो सके तो विश्व को और बेहतर समझा जा सकता है। मंत्र में उच्चारण की ध्वनि का संचालन भीतर की तरफ होता है, आत्मा जगाना है, अपनी खुद की। हम जो भीतर साये पड़े हैं यदि जाग जाएं तो हमें सब पता है, हम कुछ भी कर सकते हैं। जीवन के मंत्र होते हैं। सफलता के मंख होते है। मन को अनुशासित करना पड़ता है। यंत्र मानव बनाता है, जैसे कील, कम्प्यूटर, हवाई जहाज, चाकू और रोबोट। आप अपने आसपास जो चीजें देखते हैं वे सब यंत्र हैं। ये पदाथ से बनते है। हम भी पदार्थ से मिलकर बने हैं। हम पदाथ ही हैं। बस आत्मा और मन में हमें मानव बना दिया है। इनका साथ छूटते ही हम फिर पदार्थ बन जाते हैं। मानव मूल्यों का स्तर गिर रहा है। मन पर तन हावी हो चलता है। मानव स्वयं ही एक यंत्र बनता जा रहा है। मानव स्वयं ही एक यंत्र बनता जा रहा है। वो जो चाहता है वह पा सकता तो सिद्ध हो जाएगा। सिद्धि माने किसी कार्य का पूर्ण हो जाना। मानव सिद्ध कब होगा? जब वह पूर्ण हो जाएगा। मानव की पूर्णता क्या है? इस पर विचार कीजिये।

जिज्ञासा – ज्योतिष क्या है?

समाधान – ज्योति पिण्ड अर्थात चमकीले शरीर या निकाय। पृथ्वी एक अंतरिक्षीय पिण्ड है अर्थात हम अंतरिक्ष में रहते हैं। अंतरिक्ष (Space) माने खाली जगह। इस अनंत खाली जगह में अनंत ज्योति पिण्ड घूमते रहते है। ज्योति अर्थात प्रकाश। प्रकाश देने वाले पदार्थो को ज्योतिष्क कहा जाता है। इनकी स्थिति, और जीवन पर इनके प्रभाव का अध्ययन ज्योतिष कहलाता है और ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता को ज्योतिषी कहते हैं।

जिज्ञासा – क्या स्वार्थी होना बुरी बात है ?

समाधान – नहीं। पहले इसको थोड़ा समझना चाहिये। स्वार्थ को दो परिवेश में समझा जा सकता है। आध्यात्मिक स्वार्थ और पदार्थिक स्वार्थ। पदार्थिक परिवेश में स्वार्थ अर्थात सिर्फ अपने बारे में सोचना, संग्रह करना और किसी से कोई हिस्सेदारी नहीं होना। जब एक व्यक्ति अत्यधिक संग्रह करता है तो बाकियों के लिये अभाव पैदा होता है और ये बुरी बात है। आध्यात्मिक परिवेश में स्वार्थ मतलब ''स्व का अर्थ'' माने खुद को समझना। ''मैं कौन हूँ'' ये जानना। ये कोई बुरी बात नहीं है। पर स्वार्थ दो तरह से हो सकता है। पहला हम अपना फायदा कर पायें। दूसरा हम लोगों का नुकसान करके अपना फायदा करें। मतलब सही स्वार्थ और गलत स्वार्थ। सहीं स्वार्थ किया जा सकता है, बुरा स्वार्थ खराब है, यह व्यक्ति को लालची, जमाखोरी, अकेला और बीमार बना देता है। अब आप ही साचें कि स्वाथ बुरा है या नहीं।

जिज्ञासा – हम असफल क्यों हो जाते हैं ?

समाधान – सफलता माने हमने वो पा लिया जो हम पाना चाहते हैं। हम असफल क्यों हो जाते हैं ये जानने के लिये जरूरी है कि हम क्या पाना चाहते हैं जो हमें नहीं मिला। फिर भी हम इसलिये असफल हो जाते हैं क्योंकि हम अपना उद्देश्य लोगों के सामने नहीं लाते। यदि हम अपने दोस्त बना लें और सब अपनी मंजिल तय कर लें तो सफलता का प्रतिशत बढ़ जाएगा। ज्यादा लोग सफल होने लगेंगे। हम एकात्मवादी हो गये हैं। हम किसी की मदद नहीं करते और किसी की मदद नहीं लेना चाहते। नतीजा होता है कि हम अकेले पड़ जाते हैं। ऐसे अकेले–अकेले लोगों को सफलता पाना थोड़ा मुश्किल होता है। हम सिर्फ खुद को ही सर्वोत्तम मानते हैं। या खुद को कुछ नहीं समझते। हम अतिवादी हो जाते है। हम अपनी जिंदगी में औरों को सम्मिलित नहीं करते। हम संकीर्ण रह जाते हैं। एकांकी हम बीमार पढ़ गये तो सफलता गई। देर हो गये, तो सफलता गई। छोटे–छोटे झटके हमारी सफलता को खत्क कर देते हैं। हमें एकता की शक्ति समझना चाहिये – सफलता का दोहन किया जाता है – सिर्फ चलने से मंजिल नहीं मिलती। मंजिल की तरफ चलना पड़ता है।

जिज्ञासा – निराशा क्यों होती हैं ?

समाधान – क्योंकि हम आशा करते हैं। यदि उम्मीद नहीं करोगे तो ना उम्मीद कभी नहीं होगी। जब हमें हमारे चाहे परिणाम नहीं मिलते तो निराशा होती है। हमारी उम्मीदें लगातार बढ़ती जा रही है। हम अपनी क्षमताओं का आंकलन किये बिना ही आशा लगाये बैठे हैं। आज की जटिल दुनिया में सामान्य लोग बढ़ गये हैं। लोगों के अधिकारों का मोलभाव हो रहा है। अधिकार छीने जा रहे हैं। योग्यता का कोई मूल्य नहीं बचा है। हमारी सामाजिक संरचना बिगड़ रही है। नतीजा

होता है कि व्यक्ति टूट जाता है और अपना मार्ग बदल लेता है। समाज मर्यादाएं भूल रहा है – समाज ने ही निराशा पैदा किया है। वर्तमान समाज में निराशा का कारण पैसे किया है। वर्तमान समाज में निराशा का कारण पैसे की भूख, और आधुनिक बनने की होड़ है। नशा व्यक्ति को खा जाता है ऐसे ही होड़। इतनी प्रतियोगिता की कोई आवश्यकता नहीं है। अंतरिक्ष अनंत है। सभी को अपने लिये जगह मिल जाएगी। इतना निराशा होने को कुछ नहीं, ये सब गुजर जाएगा।

जिज्ञासा – हम अपने सोचने का तरीका कैसे बदल सकते हैं?

समाधान – मस्तिष्क एक कोरी स्लेट है। हम जैसा देखते हैं, सुनते हैं, महसूस करते हैं, हमारी मस्तिष्क की स्लेट पर चिन्हित होता रहता है। उसी ज्ञान के आधार पर हम परिस्थितियों का अवलोकन और विश्लेषण करते हैं। ऐसे ही हमें सुख और दुख होते हैं। ऐसे ही हमें दर्द और राहत का आभास होता है। हम अपने अनुभवों को हनी बदल सकते पर नये प्रयोग किय जो सकते हैं, नयी परिस्थितियां पैदा की जा सकती है। जैसे अलग–अलग रंग अलग–अलग अनुपात में अलग–अलग नये रंग बनाते हैं, ऐसे ही अलग–अलग अनुभवों का निर्माण करते हैं। हमें नयापन सीखना चाहिये। प्रयोग करने से डरना नहीं चाहिये। हम जैसा चाहें हमारा मस्तिष्क वैसा ही सोचेगा, पर तब, जब वो हमारा दोस्त हो। हमें अपने मन–मस्तिष्क–हृदय–शरीर को समझना होगा उन्हें अपना मित्र बनाना होगा। इस तरह हम अपने सोचने के तरीके पर प्रभाव डाल सकते हैं।

जिज्ञासा – क्या दोस्त बनाना जरूरी है?

समाधान – जरूरी कुछ नहीं होता। यदि कुछ नहीं पाना हो तो कुछ मत करो, चलेगा। पर यदि कुछ पाना हो तो कुछ करना पड़ेगा। हम जब किसी के हमदर्द बन जाते हैं, हमें सहानुभूति होती है और उसके जीवन से हम जुड़ जाते हैं तो हम उसके दोस्त बन जाते हैं। दोस्त नया जीवन होते हैं, हमारे जीवन से अलग। उनकी मानसिक स्थिति, उनके कार्य हमें समझदार बनने में सहयोग करते हैं। दोस्त बनाये नहीं जाते – अपने आप कुछ तरंगे हमें दोस्त बना देती हैं। हमें अपने मन, मस्तिकष्क, हृदय और शरीर से सबसे पहले दोस्ती कर लेनी चाहिये। हमारा सबसे बेहतर दोस्त हम खुद ही हो सकते हैं। कोई हमारा दर्द ऐसे महसूस नहीं करता, जैसे हम। दोस्त जरूरी हैं यदि हम जीवन जीना चाहें। यदि जीवन सिर्फ बिताना हैं, तो कुछ भी चलेगा।

जिज्ञासा – जनसंख्या की समस्या कब खत्म होगी?

समाधान – ये गलत प्रश्न है। मैं नहीं मानता कि जनसंख्या भारत की समस्या है। हां गरीबी, अशिक्षित, लापरवाह जनसंख्या भारत की समस्या है।

''लोग किसी भी देश का सबसे कीमती संसाधन है।'' अर्थात किसी देश की सबसे कीमती संपदा उसके लोग हैं। सोना, लोहा, पेट्रोलियम किसी देश को अमीर ताकतवर नहीं बनाते। कोई

देश को अमीर ताकतवार नहीं बनाते। कोई देश बनता है उसके लोगों से। तो ज्यादा संसाधन समस्या कैसे हो सकता है। हाँ संसाधन को सही तरीके से दोहन किया जाना जरूरी है। समस्या जनसंख्या नहीं भारत की राजनीति है जो लोगों को आगे बढ़ने के रास्ते उपलब्ध नहीं करा पा रही। बेईमान, भ्रष्ट, नेताओं के चक्कर में हमारी सबसे कीमती संपदा हमें समस्या लगने लगी है। ये शर्म की बात हैं। किसी को तो आगे आना होगा ये बताने के लिये कि मैं भारत पर बोझ नहीं हूं। मैं भारत का एक सामान्य व्यक्ति और ऐसे ही हम सब भर के लोग।

जो है वो दो –
जो नहीं है
और पाने लायक है
उसे पाने का प्रयत्न करो।
ज्ञान है और किसी को दिया नहीं
तुमने पाप किया।
कमाना आता है दूसरे को नहीं सिखाया –
ये तुम गलत कर रहे हो।
मुक्ति का मार्ग मालूम हो
तो सबको दिखाओ –
सुख बांटो सुख बढ़ता है –
दुख बांटो दुख घटता है –
तो क्यों ना बांटे
हम सब मिलकर –
अपने सुख–दुख।

जिज्ञासा – भारत का भविष्य क्या है?

समाधान – भारत महानायक है। अभी ये महा अजगर सो रहा है। जब वह उठेगा ुदनिया देखेगी। अभी हमारा सोच बदल रही है और ऐसा जरूरी भी है। पर आधुनिकता के नाम पर अश्लीलता बढ़ रही है। पर आधुनिकता के नाम पर अश्लीलता बढ़ रही है। पाखण्ड, ढोंग, घमंड, भोंदूपन लोगों में बढ़ रहा है। इस कारण समाज और राजनीति भ्रष्ट, बीमार होती जाती है। समाज देश का आईना है – जैसा समाज वैसा देश। हमारी समस्याओं का इलाज हमारे भीतर है। हमें बदलना होगा। ऐसा बहुत जरूरी है। ज्ञान अगली दुनिया की सबसे बड़ी ताकत होगा। एटम बम से भी बड़ी हमारी ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा थोड़ी कम हो रही है। सास–बहू, घर–घर की कहानी, क्रिकेट,

फिल्मी गाने हमारा बहुत सारा कीमती जीवन नष्ट कर देते हैं। हम सिर्फ 70 साल औसत जीवन जीते हैं और उसमें से इतना सारा समय यूं ही चला जाता है। हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत स्वीकार करनी होगी। हमारी सोच दूरदर्शी है। हमारी यांत्रिक दक्षता का लोहा दुनिया मानती है। भारत महानायक है, हमें हमारा रोल समझना होगा, और उसके अनुसार काम करना पड़ेगा।

जिज्ञासा – अमेरिकावाद कब तक चलेगा ?

समाधान – अमेरिकावाद माने पश्चिमी सभ्यता और विचारधारा का बाकी दुनिया की समभ्यता और विचारधारा पर शासन। ऐसा हो रहा है पर हमेशा ऐसा नहीं रहेगा। अमेरिकी तानाशाही दुनिया को अच्छी नहीं लग रही। घमंडी का सिर हमेशा नीचा हेाता है। यही अमेरिका के साथ होगा। पर अमेरिका से बहुत कुछ सीखा जाना चाहिये। मानवीय ज्ञान का इससे ज्यादा इस्तेमाल और कहीं नहीं हुआ। लगन, निष्ठा, विकास की सोच और प्रगति के लिये पैसा लगाने की क्षमता अमेरिका से सीखी जा सकती है। अमेरिकावाद तो खत्म हो जाएगा पर अमेरिका रेहेगा, हमेशा। पर उसे दुनिया के साथ चलना सीखना होगा, और वो ऐसा कर लेगा, मुझे उम्मीद है, जितनी तेजी से वो अध्यात्म पर अन्वेषण कर रहे लें मुझे डर लगता है कहीं वो आत्मा को भी न खोज लें और ये दुनिया के लिये विज्ञान की सबसे शानदार भेंट होगी।

जिज्ञासा – भविष्य की सबसे बड़ी समस्या क्या हैं ?

समाधान – पानी, पानी की कमी पीने के पानी की कमी। समुद्र भरे रहेंगे पर मीठा पानी कम होगा। मानव ने थोड़ी जल्दबाजी कर ली। जो हो गया उसे वापस नहीं लिया जा सकता। अब इसका परिणाम तो भुगतना होगा। मानव ने जंगल काट दिया। अब मेघों का कोई स्वागत नहीं करता और वे ऐसे ही नहीं बरसते पेड़ जरूरी है। खैर हमारी पीढ़ी तो अगले 20 साल ये समस्या झेल लेगी। हमें अगली पीढ़ी के लिये इलाज खोजकर जाना होगा। वर्ना बड़े होकर वो कहेंगे हमारे बुजुर्गों ने हमारी जिन्दगी बर्बाद कर दी। पेड़ लगाइये। जितने लगा सकें और सबसे कहिये कि वो भी ऐसा करें।

ये हमारी जिम्मेदारी हैं, इससे भागना बेवकूफी होगी।